'श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट' का निर्णय

(जो 17 जुलाई 2012 को **श्रीरामशरणम्** दिल्ली में विशेष सत्संग में पढ़ा गया)

श्रीराम

श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट नई दिल्ली, अपने परम पूजनीय स्वामी डा. विश्वामित्र जी महाराज के श्री चरणों में भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता है। उन्होंने गहन ध्यान के मध्य, राम नाम जपते हुए, विशाल संगत की उपस्थिति में 2 जुलाई, 2012 को नीलधारा हरिद्वार में महा निर्वाण प्राप्त किया। जिस प्रकार से व्यासपूर्णिमा के मंगलमय दिवस के पूर्व उनकी आत्मा का परमात्मा के साथ मिलन होकर वे ब्रह्मलीन हुए हैं, उससे यह स्पष्ट है कि वे आध्यात्मिक दृष्टि से परिपूर्ण परम भक्त, संत शिरोमणि थे।

परम पूजनीय स्वामी डा. विश्वमित्र जी महाराज ने 9 दिसम्बर, 1993 को श्रीरामशरणम्, आध्यात्मिक केन्द्र, लाजपत नगर, नई दिल्ली की बागडोर सम्भाली, उसके बाद से ही वे इस अद्वितीय संस्था को उच्चतम आध्यात्मिक ऊंचाईयों की ओर ले गये। उनके 19 वर्षों के अनथक प्रयासों के फलस्वरूप श्रीरामशरणम् के कार्य का विस्तार देश विदेश में दूर दूर तक हुआ है।

संस्था की गतिविधियों का विस्तार करते हुए परम पूजनीय स्वामी डा. विश्वामित्र जी महाराज ने परम पूज्य श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज एवं परम पूज्य श्री प्रेम जी महाराज द्वारा स्थापित आध्यात्मिक विचारधारा को संरक्षित रखा एवं परिपुष्ट किया।

श्रीरामशरणम् परिवार आज अपने इन तीन प्रातः वंदनीय एवं नित्य स्मरणीय, अद्वितीय, यशस्वी, अनुकरणीय आदर्श गुरुजनों की ज्योतिर्मयी उपस्थिति से शोभायमान हो रहा है। सन् 1925 में जब से स्वामी सत्यानन्द जी महाराज को राम नाम का साक्षात्कार हुआ और उसको प्रसारित करने का दिव्य आदेश मिला, तब से साधकों की वृद्धि न केवल संख्या की दृष्टि से हुई है अपितु उनकी श्रद्धाभाव

कृपया पृष्ठ पलटिए

एवं आध्यात्मिकता का भी भरपूर विकास हुआ है। श्रीरामशरणम् इन्टरनैशनल सैन्टर के साधक गण वर्तमान में आध्यात्मिकता में परिपक्व हो गये हैं, व अपने तीनों गुरुजनों के प्रति समर्पित हैं और अटूट श्रद्धा व प्रेम से एकनिष्ठ होकर जुड़े हैं।

परम पूज्य श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज, पूज्य श्री प्रेम जी महाराज एवं स्वामी डा. विश्वामित्र जी महाराज ने अपनी अनुकरणीय जीवन शैली, शिक्षा एवं उपदेशों द्वारा एक विशिष्ट आध्यात्मिक विचारधारा प्रदान की है जो सरल, सुगम होने के कारण सभी को समझ में आ जाती है।

उनके द्वारा रचित ग्रन्थ, उपदेश एवं प्रवचन साधकों के लिए सदैव प्रेरणा के स्रोत व पथ प्रदर्शक हैं, जिन्हें साधकगण हृदय से आत्मसात कर रहे हैं और करते रहेंगे। श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट नई दिल्ली ने यह निर्णय लिया है कि कोई नया व्यक्ति गुरु के स्थान पर नहीं आयेगा अपितु तीनों परम श्रद्धेय गुरुजनों की जीवन शैली, विचार एवं शिक्षाएं सर्वदा सभी साधकों के लिए जीवन्त गुरु रहेंगी। यह निर्णय इस आधार पर भी उचित है कि परम पूजनीय स्वामी डा. विश्वामित्र जी महाराज ने अपना कोई उत्तराधिकारी तैयार नहीं किया एवं उन्होंने इस विषय में कोई दिशा निर्देश भी नहीं दिए।

अन्त में श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट नई दिल्ली दृढ़ता से यह प्रतिज्ञा करता है कि वह संस्था के आध्यात्मिक स्वरूप को सुरक्षित रखते हुए व विस्तारित करने के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहेगा।

धन्यवाद

— o —